मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है

****

परिचय

मराठी, एक भारतीय-आर्यन भाषा है जो भारत के महाराष्ट्र राज्य में व्यापक रूप से बोली जाती है, इसकी एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा है जो एक हजार साल से भी अधिक पुरानी है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और संचार के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में मराठी अपनी विविध साहित्यिक विरासत के माध्यम से अपने लोगों की अनूठी परंपराओं और मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है, जिसमें कविता, गद्य और लोककथाएं शामिल हैं। भारत सरकार ने हाल ही में मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है, जो इस भाषा की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह सम्मान न केवल मराठी के व्यापक साहित्यिक योगदान का सम्मान करता है, बल्कि इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को भी उजागर करता है।

प्राचीनता और मराठी भाषा का प्रारंभिक विकास

मराठी भाषा का एक विस्तृत और समृद्ध इतिहास है जो सदियों से विकसित हो रहा है और आज भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। इसकी जड़ें 2500 साल से भी ज़्यादा पुरानी हैं, जो प्राचीन महारथी, मराठ्ठी, महाराष्ट्री प्राकृत और अपभ्रंश मराठी जैसी भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। भाषा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, लेकिन विभिन्न ऐतिहासिक चरणों के माध्यम से इसकी निरंतरता बनी हुई है।

आधुनिक मराठी का विकास इस क्षेत्र में बोली जाने वाली प्राचीन भाषाओं से हुआ, जिसकी शुरुआत महाराष्ट्री प्राकृत से हुई, जो सातवाहन युग (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसवी) के दौरान बोली जाने वाली प्राकृत भाषा की एक बोली थी। मराठी भाषा का पहला ज्ञात शिलालेख लगभग 2200 वर्ष पुराना है, जो नाणेघाटा शिलालेख में पाया जाता है, जहाँ "महारथिनो" शब्द का प्रयोग किया गया है। ब्राह्मी लिपि में लिखे गए इस शिलालेख से यह सिद्ध होता है कि यह भाषा कम से कम कुछ शताब्दियों पहले अस्तित्व में रही होगी।

महाराष्ट्र प्राकृत से मराठी में परिवर्तन उच्चारण और व्याकरण में क्रमिक परिवर्तनों द्वारा चिह्नित किया गया था, जिसमें महारथी और मराठी जैसे नाम भाषाई बदलावों का संकेत देते हैं।

मराठी साहित्य का विकास

मराठी में सबसे पुरानी ज्ञात साहित्यिक कृति, गाथासप्तशती, लगभग 2000 वर्ष पुरानी है और प्रारंभिक मराठी कविता की श्रेष्ठ गुणवत्ता को दर्शाती है। यह सातवाहन राजा हला द्वारा रचित

कविताओं का संग्रह है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे पहली शताब्दी ई. में संकलित किया गया था। इसके बाद लीलाचरित्र और ज्ञानेश्वरी का उदय हुआ, जब मराठी लगभग आठ शताब्दियों पहले परिपक्व भाषाई स्तर पर पहुंच गई थी। इन कृतियों से पता चलता है कि इन ग्रंथों की रचना से बहुत पहले ही मराठी एक समृद्ध और अभिव्यंजक भाषा के रूप में विकसित हो चुकी थी।

पत्थर के शिलालेखों और अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों की भूमिका

अनेक पत्थर के शिलालेख, ताम्रपत्र, पांडुलिपियाँ और पुराने धार्मिक ग्रंथ (पोथियाँ) मराठी की गहरी ऐतिहासिक जड़ों को साबित करते हैं। नानेघाटा शिलालेख एक महत्वपूर्ण कलाकृति है जो कम से कम 2500 साल पहले मराठी के प्रयोग को प्रदर्शित करती है। मराठी के अन्य महत्वपूर्ण संदर्भ प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे विनयपिटक, दीपवंश और महावंश के साथ-साथ कालिदास और वररुचि जैसे प्रमुख लेखकों की कृतियों में भी पाए जाते हैं।

मराठी के अध्ययन में विद्वानों का योगदान

सदियों से, राजारामशास्त्री भागवत, एस.वी. केतकर, महापंडित राहुल सांकृत्यायन और डॉ. आर.जी. भंडारकर जैसे विद्वानों ने मराठी के विकास का पता और महाराष्ट्री प्राकृत से उसकी उत्पत्ति का लगाया है। उन्होंने, वी.के. राजवाड़े और ऐनी फेल्डहॉस जैसे अन्य लोगों के साथ मिलकर इस बात पर जोर दिया है कि मराठी, महाराष्ट्री और अपभ्रंश मराठी अलग-अलग भाषाएं नहीं हैं, बल्कि एक ही भाषाई परंपरा के विभिन्न चरण हैं। महाराष्ट्री भाषा अश्मक, कुंतला और विदर्भ सहित कई प्राचीन क्षेत्रों में व्यापक थी और सदियों के दौरान आधुनिक मराठी के रूप में विकसित हुई।

110 मिलियन देशी वक्ताओं के साथ मराठी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली शीर्ष 15 भाषाओं में से एक है। इस भाषा में साहित्यिक उत्कृष्टता की एक लंबी परंपरा है, जिसके कारण हर साल इस भाषा में हजारों पुस्तकें और प्रकाशन प्रकाशित होते हैं। मराठी की साहित्यिक विरासत में संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम और कई अन्य संतों की रचनाएं शामिल हैं, जिनके योगदान को व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है।

शास्त्रीय भाषा का दर्जा और वैश्विक पहुंच

इसकी समृद्ध और प्राचीन साहित्यिक परंपरा को मान्यता देते हुए भारत सरकार ने मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है। इसकी उच्च प्राचीनता और सहस्राब्दियों से निरंतर साहित्यिक उत्पादन का प्रमाण मराठी को इस स्थिति के लिए एक मजबूत उम्मीदवार बनाता है। इस मान्यता के साथ मराठी शिक्षा को बढ़ावा देने, इसकी समृद्ध साहित्यिक परंपराओं पर शोध को

प्रोत्साहित करने और यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा सकते हैं कि समकालीन समाज में भाषा का विकास जारी रहे। इस प्रकार शास्त्रीय दर्जा मराठी को सुरक्षित रखने और पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह सुनिश्चित करता है कि इसकी विरासत भविष्य की पीढ़ियों के लिए बनी रहे।

****